International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.512|

|| Volume 9, Issue 7, July 2020 ||

हाड़ौती शैली की विषयवस्तु

Geetam Pradhan

Assistant Professor, M.G.R. College, Anta (Baran), Rajasthan, India

सार

हाड़ौती (जिसे **हाड़ौली**, **हाड़ावली**, इत्यादि नाम से भी जाना जाता है) बूंदी राज्य था। यह पूर्वी राजस्थान में स्थित है। इसके बड़े शहरों में बूंदी और कोटा हैं।

इसमें सम्मिलित जिले हैं:

- बूंदी जिला
- बारा जिला
- झालावाड़ जिला
- कोटा जिला

इसके पश्चिम में मेवाड़, उत्तर पश्चिम में अजमेर हैं। इसके दक्षिण में मालवा और पूर्व में गिर्द क्षेत्र हैं। दक्षिण पूर्वी राजस्थान का क्षेत्र पूर्व में मालवा पठार, पश्चिम में अरावली पर्वतमाला और पश्चिम में मारवाड़ पठार, मध्य प्रदेश की सीमा पर स्थित है। प्रमुख नदी चंबल नदी है, जिसकी सहायक नदियाँ कालीसिंध, पार्वती नदी, परवन नदी और चापी नदी हैं। मिट्टी जलोढ़ है।

परिचय

उत्तर भारत का ऐतिहासिक क्षेत्र

हाड़ौती

हाड़ौती (जिसे **हाड़ौली**, **हाड़ावली**, इत्यादि नाम से भी जाना जाता है) बूंदी राज्य था। यह पूर्वी राजस्थान में स्थित है। इसके बड़े शहरों में बूंदी और कोटा हैं।

इसमें सम्मिलित जिले हैं:

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.512|

|| Volume 9, Issue 7, July 2020 ||

हाड़ौती क्षेत्र राजस्थान में

बूँदी

प्रतिहार मीणा, मीना समुदाय का एक उप-समूह है। यह लोग ज़्यादातर बूँदी शहर के क्षेत्र में पाए जाते हैं। वे बूँदी के संस्थापक थे और बूँदी नाम राजा बूँदा मीणा पर पड़ गया था। प्राचीन काल में बूँदी को "बंदु-का-नाल" या तंग रास्ता था। किसी समय यहाँ के राजा राव देव हारा था। उन्होंने बूँदी को जैता मीना से 1241 में हथिया लिया और पूरे क्षेत्र का नाम हड़ौती या हड़ोती रखा।

कोटा

1264 की एक युद्ध में जैत सिंह ने जो समर सिंह के पुत्र थे, भील राजा कोटिया भील की हत्या कर कोटा [अकेलगढ] पर क़बज़ा कर लिया। वह कोट्या की वीरता से इस हद तक प्रभावित हो गए थे कि उन्होंने इस नवीन रूप से अधिकृत स्थान का नाम कोटा रख दिया। कोट्या का शरीर से अलग किया गया सर जैठ सिंह द्वारा निर्मित नए क़िले की नीव में दफ़न कर दिया गया। कोट्या को तब से आदर के स्थान में रखा गया है और कोट्या भील मन्दिर में हर दिन उसका स्मरण किया जाने लगा। यह महल की बाहरी दीवार में स्थित है जो मुख्य द्वार की बाईं ओर है। कोटा शायद एक-मात्र नगर है जो किसी विजयी के स्थान पर पराजित व्यक्ति के नाम पर बना है। कोटा के स्वतंत्र राज्य का गठन 1631 में संभव हो सका। यह महल, जिसे बाद के शासकों ने परिवर्तित किया है, आज भी मौजूद है, और इसे आम तौर से स्थानीय लोगों द्वारा गढ़ महल कहा जाता है।

झालावाड़

1838 में कोटा के सरदार की सहमति से यह तय किया गया कि इससे झालावाड़ को अलग किया जाएगा और झालावाड़ राज्य का एक प्रावधान रखा जाए जहाँ ज़ालिम सिंह के वंशज राज्य-भार संभालेंगे।

बाराँ

14वीं -15वीं शताब्दी में बाराँ शहर सोलंकी राजपूतों के अधीन रहा। यह सटीक रूप से पता नहीं चल सका कि 12 गाँवों के बीच एक प्रमुख नगर का नाम बाराँ कब पड़ गया। इस बारे में कई विचार हैं, जैसे कि कुछ मानते हैं कि "बारह गाँव" से "बाराँ" नाम लिया गया है। कुछ मानते हैं कि चूँकि इस क्षेत्र की मिट्टी अधिकांशत: बारानी है, इसी से यह नाम बाराँ पड़ गया।

पूरे क्षेत्र का नाम बूँदी था जब कई राज्य इससे अलग होकर बिखर गए। यह पूरा क्षेत्र वर्तमान राज्य राजस्थान का भाग है। इनमें सबसे बड़े नगर बूँदी और कोटा हैं।

इसमें बूँदी, बाराँ, झालावाड़ और कोटा के ज़िले भी शामिल हैं और यह पश्चिम में मेवाड़ से लगते हैं, पूर्वोत्तर में अजमेर क्षेत्र से लगते हैं, दक्षिण में मालवा से जुड़ते हैं और पूर्व में मध्य प्रदेश राज्य के गिर्द क्षेत्र से जुड़ते हैं।

इस क्षेत्र का नाम तृप्त हड़ राजपूतों पर पड़ गया है जो विशाल चौहान राजपूतों के वंश की शाखा है। हड़ इस क्षेत्र में 12वीं शताब्दी में आकर बस गए थे और क्षेत्र पर कई सदियों तक अपना वर्चस्व बनाए रखे थे। हड़ राव देव ने बूँदी पर 1241 में और कोटा पर 1264 में क़बज़ा जमाया। एक समय पर हड़ का संयुक्त राज्य वर्तमान ज़िलों बाराँ, बूँदी, कोटा और झालावड़ तक फैला हुआ था।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.512|

|| Volume 9, Issue 7, July 2020 ||

विचार-विमर्श

हाड़ौती चित्रकला शैली

बूँदी शैली:-

यह हाड़ौती शैली की उपशैली है, इस शैली का सर्वाधिक विकास या स्वर्णकाल राव सुर्जनसिंह का काल हैं। मेवाड़ व मुगलशैली के मिश्रण से इस शैली उद्भव हुआ। महारावल उम्मेदसिंह के काल में बनी हुई बूंदी में चित्रशाला सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं।

यह चित्रशाला "भित्ति-चित्रों का स्वर्ग" कहलाती है। इस शैली के चित्रकार सुर्जन, रामलाल व अहमद अली थे। यह राजस्थान की एकमात्र ऐसी चित्रशैली है, जिसमें मोर के साथ सर्प का चित्रण हैं।

बूँदी चित्रशैली में पशु-पक्षियों का सर्वाधिक चित्रण किया गया है इसलिए इसे पक्षी शैली भी कहते हैं। इस शैली में हरे रंग का सर्वाधिक प्रयोग हुआ हैं तथा खजूर का प्रमुख वृक्ष हैं। प्रमुख पशु शेर व हिरण तथा प्रमुख पक्षी बतख हैं।

बूँदी शैली के चित्रों में कविता व कला दोनों पद्धतियों का मिश्रण हैं। इस शैली का प्रमुख चित्र पशु-पक्षी, रागमाला (इस शैली का सबसे प्रमुख चित्र), फल-फूल, घुड़दौड़, बसंत रागीनी, रागीनी भैरव, ऋतु वर्णन, मतिराम के रसराज पर आधारित चित्रण, तीज-त्योंहार व अन्य उत्सव, हाथियों की लडाई आदि है।

विशेष-

बूँदी शैली राजस्थानी चित्रकला की विचारधारा का प्रमुख केद्र थी तथा वर्षा में नाचता हुआ मोर इस शैली में राजस्थान की एक विशेषता है। इस शैली के चित्रों में रेखाओं का महत्त्व रंगों से ज्यादा है।

इस शैली में चित्रित नारी सौन्दर्य भी अद्भूत है। नारी की विशेषता छोटा कद, मोटे गाल, लम्बी नाक, आंखे आम्रपत्र के समान है।

कोटा चित्रशैली:-

हाड़ौती शैली की उपशैली इस शैली का स्वर्णकाल उम्मेदसिंह प्रथम का काल कहलाता हैं। इस शैली के प्रमुख चित्रकार रघुनाथ, डालू, लच्छीराम, नूरमोहम्मद, गोविन्दराम आदि हैं। 1768 ई. में चित्रकार डालू द्वारा चित्रित रागमाला सेट कोटा कलम का सर्वाधिक बड़ा रागमाला सेट हैं।

इस शैली में नारियों अथवा रानियों को शिकार करते हुऐ दिखाया गया हैं। चम्पा, घनघोर घटा, नाचता हुआ मोर, दरबार के द्दष्य, कदम्ब के वृक्ष के नीचे बैठा हुआ शेर आदि चित्रित हैं।

इस शैली का प्रमुख वृक्ष खजूर, प्रमुख रंग नीला, प्रमुख पक्षी बतख, प्रमुख पशु शेर है। इस शैली पर वल्लभ सम्प्रदाय का प्रभाव पडा हैं। जिसके कारण श्रीकृष्ण लीला के चित्रों में पुष्टि मार्गिय परम्परा का विकास हुआ है।

इस शैली में स्त्री की लम्बी नाक, पीन अधर, क्षीणकटि, कदली सम जघांए अलंकार बाहुल्य हैं।

विशेष-

इस शैली में भित्ति चित्रण प्रमुखता से हुआ है। कोटा के किला की झाला हवेली इस शैली के भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध है।

कोटा का आलनियां स्थल शैल भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध है।

परिणाम

हाड़ौती भारतीय राज्य राजस्थान की भाषा राजस्थानी की एक बोली है, जो दक्षिण-पश्चिमी राजस्थान के हाड़ौती क्षेत्र में लगभग चालीस लाख लोगों द्वारा बोली जाती है, जो जिला कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड और मध्य प्रदेश के पड़ोसी इलाकों में बोली जाती है। इसमें एक कर्ता मार्कर ने आता है, जो अन्य राजस्थानी भाषाओं में मौजूद नहीं है।

मानक हिंदी के समान इसका शब्द क्रम विशिष्ट विषय-वस्तु-क्रिया है। इसकी विशेषता है कि हिंदी के विपरीत, कर्म कारक की प्रकृति के आधार पर, परफ़ेक्ट टेन्स में एजेंट मार्कर की उपस्थिति या अनुपस्थिति है।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.512|
|| Volume 9, Issue 7, July 2020 ||

हाड़ौती चित्रकला शैली प्रकार विशेषताएँ
बूंदी शैली

- इस शैली पर मेवाड़ चित्र शैली का प्रभाव स्ष्ट नजर आता है ।
- बूंदी शैली का स्वर्णकाल सुर्जन सिंह हाड़ा का काल माना जाता है।
- बूंदी शैली को राजस्थानी विचारधारा की शैली या प्राचीन विचारधारा की शैली कहा जाता है।
- बूंदी शैली, किशनगढ़ शैली के बाद राज्य की सर्वश्रेष्ठ शैली है।
- बूंदी शैली में दक्षिण शैली, ईरानी शैली, मुगल शैल / व मराठा शैली का समन्वय देखने को मिलता है।
- बूंदी शैली के अन्तर्गत यहां स्थित चित्रशाला का निर्माण राव उम्मेद सिंह हाड़ा ने करवाया। जिसे भित्ति चित्रों का स्वर्ग कहते हैं। रंगमहल के चित्र राव शत्रुशाल हाड़ा के समय तैयार किए गए ।
- पशु-पक्षियों का चित्रण बूंदी शैली की प्रमुख विशेषताएं है इस शैली में सुनहरे तथा भड़कीले रंगों का प्रयोग बहुतायत किया गया है।
- इस शैली के प्रमुख चित्रकार अहमद अली, सुर्जन, अहमदली, रामलाल, श्री किशन ओर साधुराम इस शैली के प्रमुख कलाकार हुए है।

शत्रुशाल (छत्रशाल)

- रंगमहल का निर्माण करवाया जो अपने सुंदर भित्ति चित्रण के कारण विश्व प्रसिद्ध है।
- अनिरुद्ध सिंह के समय हाड़ोती चित्र शैली में, साउथ शैली का प्रभाव भी आया
- बूंदी चित्रशैली की विशेषता प्रधान रंग- नारंगी व हरा

बूंदी शैली के विषय

- नायिक–नायिका, बारहमासा, ऋतु चित्रण, भागवत पुराण पर आधारित कवियों की रचनाओं से सम्बंधित चित्र मिले।
- दरबारी दृश्य, अन्तःपुर या रनिवास के भोग विलास युक्त जीवन, शिकार, होली, युद्ध के चित्र मिले।
- पशु–पक्षी अर्थात बूंदी चित्र शैली को पशु–पक्षियों वाली चित्र शैली भी कहा जाता है।
- प्रकृति–आकाश में उमड़ते हुये काले बादल, बिजली की कौंध, घनघोर वर्षा, हरे भरे पेड़।

कोटा शैली
चित्रकला शैली

- इस शैली का स्वतंत्र विकास महाराजा रामसिंह के समय हुआ कोटा शैली में महाराजा उम्मेद सिंह हाड़ा के समय सर्वाधिक चित्र चित्रित किए गए।
- शिकारी दृश्यों का चित्रण इस शैली की मुख्य विशेषता है
- राज्य की एकमात्र शैली जिसमें नारियों को शिकार करते हुए दर्शाया गया है।
- कोटा शैली का सबसे बड़ा चित्र रागमाला सैट 1768 ई. में महाराजा गुमानसिंह के समय डालू नामक चित्रकार द्वारा तैयार किया गया ।
- कोटा चित्रशैली काफी हद बूंदी शैली के निकट ही नजर आती है कोटा चित्र शैली में बूंदी व मुगल शैली का समन्वय पाया जाता है।
- कोटा कलम में मुगलिया प्रभाव राव जगतसिंह के समय से देखनो को मिलता है।
- कोटा चित्र शेली महाराव उम्मेद सिंह के समय अपने चर्मोत्कर्ष पर थी
- मुख्य विशेषता जगलो में शिकार करने के चित्र यहाँ अधिक मिले है यहां शासको के साथ रानियो व स्त्रियों को भी शिकार करते हुए दिखाया गया है।
- रामसिंह (1828) में, ये कला प्रेमी थे इनको हाथी व घोड़े की सवारी अधिक प्रिय थी। अत: उनको चित्रों में राजसी वेशभूषा पहले हुये, हाथी व घोड़े पर बैठे अधिक अंकन किया गया है।
- इनके समय के चित्रों में कुछ चमत्कारी चित्र भी मिलते है जैसे, हाथी की सूंड पर नारी का नृत्य, छतरी पर हाथी की सवारी आदि–आदि।
- 1857 के समर के बाद इस शैली पर कम्पनी की कलम का प्रभाव भी आने लगा। शत्रुशाल द्वितीय के बाद ये शैली अपने पतन की ओर उन्मुख (पतनोन्मुख) हो गई

कोटा चित्रकला शैली की विशेषताएं

नारी सौंदर्य

- इस शैली में नारी का चित्रण अधिक सुंदर मिलता नासिका, पतली कमर, उन्नत उरोज, कपोल अलकावली नारी आकृति की जीवंतता प्रदान करती है।

पुरुष आकृति

- मुख्यतः बृषभ कंधे, उन्नत भौहे, माँसल देह, मुख पर भरी भरी दाढ़ी और मुछे, तलवार कतार आदि हथियारों से युक्त वेशभुषा । मोतियों के जड़े आभूषण विशेष।
- **प्रमुख रंग** हल्का हरा, पीला व नीला रंग अन्य रंगों की अपेक्षा अधिक प्रयोग हुआ है।
- **प्रमुख कलाकार**- रघुनाथ, गोविंदराम, डालू, लच्छीराम, नूरमोहम्मद

अजमेर चित्रकला शैली

- राजस्थान की अन्य चित्र-शैलियों की भांति अजमेर भी चित्रकला का प्रमुख केन्द्र रहा। अन्य रियासतों के विपरीत राजनैतिक उथल पुथल तथा धार्मिक प्रभावो के कारण यहां चित्रण के आयाम बदलते रहे ।)
- अजमेर मे जहां दरबारी एवं सामंती संस्कृति का अधिक प्रभाव रहा, वही ग्रामों में लोक-संस्कृति तथा ठिकाणों मे राजपूत संस्कृति का वर्चस्व बना रहा।
- प्रारंभिक चित्रो मे राजस्थानी और जैन -शैली का प्रचलित रुप दर्शनीय हैं व मुगलों के आगमन के बाद मुगल स्कूल का प्रभाव देखने को मिलता हैं।
- 1707 मे महाराजा अजीतसिंह के समय से अजमेर कलम पर जोधपुर शैली का प्रभाव पड़ने लगा।
- भिणाय, सावर, मसूदा, जूनियाँ जैसे ठिकाणों में चित्रण की परम्परा ने अजमेर शैली के विकास और संर्वधून मे विशेष योगदान दिया।
- ठिकाणों मे चित्रकार कलाकार करते थे जो जूनियाँ का चाँद, सावर का तैय्यब, नाँद का रामसिंह भाटी, जालजी एवं नारायण भाटी खरवे से, मसूदा से माधोजी एवं राम तथा अजमेर के अल्लाबक्स, उस्ना और साहिबा स्त्री चित्रकार विशेष उल्लेखनीय हैं।

अजमेर शैली के चित्रो की विशेषता

- पुरुषाकृति लंबी, सुन्दर, संभ्रांत एवं ओज को अभिव्यक्ति करने वाली। कानों मे कुंडल, बाली, गले मे मोतियों का हार, माथे पर वैष्णवी तिलक, हाथ मे तलवार, पैरों मे मोचड़ी धारण किये अजमेर शैली के सांमत कला के उदाहरण हैं।
- 1698 का निर्मित व्यक्तिचित्र इस कथन का सुन्दर उदाहरण हैं।
- यही एक ऐसी कलम रही जिसको हिन्दू, मुस्लिम और क्रिश्चियन धर्म का समान प्रश्रय मिला।
- सन् 1700-1750 ई. के मध्य के सभी चित्र नागौर से मिले हैं। इस द्रष्टि से नागौर शैली का विकास भी 18वीं शताब्दी के प्रारंभ से माना जाता हैं।
- नागौर शैली के चित्रों में बीकानेर, अजमेर, जोधपुर, मुगल और दक्षिण चित्र शैली का मिलाजुला प्रभाव है। नागौर शैली मे बुझे हुये रंगों का अधिक प्रयोग हुआ हैं।
- 1700-1750 ई. का ठाकुर इन्द्र सिंह का चित्र इस शैली का उत्कृष्ट चित्र हैं। वृद्धावस्था के चित्रों को नागौर के चित्रकारों ने अत्यंत कुशलतापूर्वक चित्रित किया है।
- नागौर शैली की अपनी पारदर्शी वेशभूषा की विशेषता है।
- शबीहों का चित्रण मुख्य रूप से नागौर मे हुआ है।

चित्रकला की प्रमुख संस्थाऐं

- जोधपुर– चितेरा, धोरा
- उदयपुर–ढखमल, तुलिका कला परिश्द
- जयपुर– कलावृत, आयाम, पैंग, क्रिएटिव संस्थाऐं, जवाहर कला केन्द्र 1993 में
- भीलवाड़ा– अंकन
- राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स एवं क्राफ्ट्स– महाराजा रामसिंह के 1857 (1866) में जयपुर में स्थापित **पुराना नाम मदरसा–ए हुनरी**
- राजस्थान ललित कला अकादमी 24 नवम्बर 1957 (1956) - में जयपुर में स्थापित है।

प्रमुख चित्रकला संग्रहालय

1. पोथी खाना– जयपुर

2. जैन भण्डार जैसलमेर

3 पुस्तक / मान प्रकाश – जोधपुर

4. सरस्वती भण्डार उदयपुर

5. अलवर भण्डार - अलवर

6. कोटा भण्डार कोटा

प्रमुख चित्रकार

रामगोपाल विजयवर्गीय

- जन्म– बालेर (सवाईमाधोपुर) में हुआ।
- राजस्थान में एकल चित्रण प्रणाली की परम्परा प्रारम्भ करने वाले प्रथम चित्रकार थे ।
- नारी चित्रण इनका प्रमुख विषय था।
- इन्हें **राजस्थान की आधुनिक चित्रकला का जनक कहते है**

गोवर्धन लालबाबा

- जन्म कांकरोली (राजसमंद) में हुआ।
- भीली जीवन का चित्रण इनका प्रमुख विषय था।
- इन्हें भीलों का चितेरा भी कहा जात है।
- इनका प्रमुख / प्रसिद्ध चित्र बारात है।

निष्कर्ष

बूंदी शैली:- राव सुरजन के समय यह चित्रकला शैली शुरू हुई थी। राव छत्रसाल ने रंग महल बनवाया जो सुंदर भित्ति चित्रों से सुसज्जित है।राव उम्मेद सिंह का समय बूंदी चित्रकला का स्वर्ण काल था। उम्मेद सिंह ने चित्रशाला की स्थापना की थी जो भित्ति चित्रों का स्वर्ग है।बूंदी शैली के अंतर्गत राव उम्मेद सिंह का जंगली सूअर का शिकार करते हुए बनाया चित्र (1750ई)प्रसिद्ध है।बूंदी शैली मेवाड़ शैली से प्रभावित रही है। राग रागिनी ,नायिका भेद ,ऋतु वर्णन ,बारहमासा ,कृष्ण लीला दरबार ,शिकार, हाथियों की लड़ाई ,उत्सव अंकन आदि बूंदी शैली के चित्र आधार रहे हैं।मुख्य चित्रकार :- रामलाल, अहमद ,साधुराम, सुरजन आदि।

विशेषताएं:-

- इस शैली में पशु पक्षियों तथा पेड़ पौधों का चित्रण सर्वाधिक किया गया है।
- हरे रंग का प्रयोग अधिक किया गया है।
- सरोवर केले और खजूर का चित्रण अधिक किया गया है।
- भित्ती चित्रण अधिक किया गया है।

कोटा शैली:- कोटा शैली में स्त्री आकृतियों का चित्रण अत्यंत सुंदर हुआ है। यह चित्रकला राम सिंह के समय प्रारंभ हुई थी।भीम सिंह के समय वल्लभ संप्रदाय का प्रभाव अधिक था इसीलिए भगवान श्री कृष्ण के चित्र अधिक बने।उम्मेद सिंह का समय कोटा चित्रकला का स्वर्ण काल था।डालू नामक चित्रकार ने राग माला का चित्रण किया था।

विशेषताएं:-

- नारी सौंदर्य का चित्रण अधिक किया गया है।
- शिकार के दृश्यों का चित्रण अधिक किया गया।
- महिलाओं को भी पशुओं का शिकार करते हुए दिखाया गया।

संदर्भ

1) हाड़ौती की जैन अभिलेख परम्परा Archived 2014 at the Wayback Machine
2) हाडौती के अल्पज्ञात खीची शिलालेख Archived 2013 at the Wayback Machine
3) 'राकेश' जी ने सिद्ध किया कि हाडौ़ती केवल बोली नहीं, एक स्वतंत्र भाषा है।
4) Dwivedi, Amitabh Vikram (2012). "The Status of Haroti: An Enquiry into Rajastani Language". मूल से 23 जुलाई 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 19 अक्तूबर 2019.
5) "Bundi District Population Census 2011, Rajasthan literacy sex ratio and density". Census2011.co.in. मूल से 3 सितंबर 2016 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2016-08-20.
6) ↑ "Uttar Pradesh in Statistics," Kripa Shankar, APH Publishing, 1987, ISBN 9788170240716
7) ↑ "Political Process in Uttar Pradesh: Identity, Economic Reforms, and Governance Archived 2017-04-23 at the Wayback Machine," Sudha Pai (editor), Centre for Political Studies, Jawaharlal Nehru University, Pearson Education India, 2007, ISBN 9788131707975
8) ↑ "संग्रहीत प्रति". मूल से 23 सितंबर 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 22 सितंबर 2018.
9) "Uttar Pradesh in Statistics," Kripa Shankar, APH Publishing, 1987, ISBN 9788170240716
10) ↑ "Political Process in Uttar Pradesh: Identity, Economic Reforms, and Governance Archived 2017-04-23 at the Wayback Machine," Sudha Pai (editor), Centre for Political Studies, Jawaharlal Nehru University, Pearson Education India, 2007, ISBN 9788131707975
11) Lonely Planet Rajasthan, Delhi & Agra," Michael Benanav, Abigail Blasi, Lindsay Brown, Lonely Planet, 2017, ISBN 9781787012332
12) ↑ "Berlitz Pocket Guide Rajasthan," Insight Guides, Apa Publications (UK) Limited, 2019, ISBN 9781785731990
13) "Lonely Planet Rajasthan, Delhi & Agra," Michael Benanav, Abigail Blasi, Lindsay Brown, Lonely Planet, 2017, ISBN 9781787012332
14) ↑ "Berlitz Pocket Guide Rajasthan," Insight Guides, Apa Publications (UK) Limited, 2019, ISBN 9781785731990